IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के गृह वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन

कृपाल सिहं

' शाधे छात्र (शिक्षा विभाग), हे.न.ब.गढवाल (केन्द्रिय) विश्वविद्यालय, स्वामी रामतीर्थ परिसर बादशाहीथौल

टिहरी गढवाल।

सारांश

गृह वातावरण जितना प्रभावशाली तथा शिक्षा प्रधान होता है, बालकों में सोचने की शक्ति भी उतनी ही प्रबल होती है तथा बालकों में समायोजन करने की क्षमता का विकास भी तेजी से होता है। विद्यार्थियों में मानवीय गुणों का विकास करने तथा सुयोग्य नागरिक बनाने हेतु गृह वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गृह वातावरण के अन्तर्गत घर का उचित वातावरण, पडोस का उचित वातावरण, खेल मैदान तथा घर के भौतिक संसाधन आदि अनेक कारक सम्मिलित रहते है जो बालक के समायोजन पर प्रभाव डालते है। शिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री गृह वातावरण है जो प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवम् विकास सहायक होता हैं। इस प्रकार से गृह वातावरण का उसके विकास मे महत्वपूर्ण योगदान होता है। उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनके प्रतिभाएं अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जैसा भौतिक वातावरण मिलता है वैसी ही जन्मजात शक्तियां विकसित होती है। घर का वातावरण समायोजित एवं सकारात्मक होगा तो यह वातावरण विद्यार्थियों के सामाजिक, शैक्षिक एवं संवेगात्मक समायोजन को सकारात्मकरूप से प्रभावित करेगा। प्रस्तुत शोध पत्र इस समस्या पर प्रकाश डालने का एक प्रयास है एवं गृह वातावरण विद्यालय तथा बालकों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव की तह तक जाने की कोशिश है।

मुख्य शब्द : गृह वातावरण, समायोजन, माध्यमिक स्तर

प्रस्तावना

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, एवं आध्यात्मिक विकास से है। शिक्षा के ,द्वारा बालक के लिए एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जो व्यक्तियों के शारीरिक क्षमता, मानसिक क्षमता तथा नैतिक क्षमताओं के निरन्तर विकास में सहायक सिद्ध होता है। विद्यालय शिक्षा के अर्न्तगतं बालक के सर्वागीण विकास का सम्पूर्ण दायित्व गृह वातावरण तथा वहाँ के संसाधन एवं वातावरण पर होता है। बालक जन्म के समयं कोरे–कागज के समान होता है तथा समय के साथ वह पहल जैसे सरल विचारों को मन में धारण करता है ,अपने ज्ञान में वृद्धि करता जाता है। बालक के लिए घर एक ऐसा स्थान है जहाँ वह माता–पिता तथा परिवार के साथं भविष्य में समायोजन हेतु वांछित कौशलों में प्रवीण बनने हेतु अनौपचारिक तरीकों को सिखता है।

शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रथम पाठशाला परिवार को ही माना जाता है, जहाँ विद्यार्थी समायोजन करने की प्रक्रिया को सिखता है। कहा जा सकता है कि जो बालक अच्छे से समायोजन वाला होता है वह बालक भविष्य में सफल होता है और वह स्वतंत्र विचार एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है। आज बढ़ती जनसंख्या और जीवन की व्यवस्था के कारण गृह वातावरण का महत्व और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। घर वह पवित्र पाठशाला है जिसमें माता–पिता एवं परिवारं के वातावरण में उपस्थित ज्ञान एवं अनुभव का ज्ञान होता है। गृह वातावरण विद्यार्थियों को जीवन के वास्तविक अनुभव प्रदान करते हुए उनमें ज्ञान का उचित उपयोग, अर्न्तनिहित क्षमताओं का विकास करता है तथा शैक्षिक ज्ञान की अभिवृद्धि, नैतिक एवं चारित्रिक विकास करने के साथ–साथ एवं उचित समायोजन स्थापित करने के लिए अभिप्रेरित करता है। प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवं विकास निधार्रित वातावरण में होता है, उचित वातावरण ना मिलने पर अनेक प्रतिभाऐं विकसित नही हो पाती । अतः बालक को

जैसा उचित वातावरण मिलता है वह उसी वातावरण को आसानी से गृहण करने की चेष्ठा करता है। विद्यालय परिसर में विभिन्न आदतों, रूचियों, योग्यताओं एवं दृष्टिकोण के बालक आते है। वह उस वातावरण के सम्पर्क मे आता है, जिससे बालक में कुछ शारीरिक तथा मानसिक परिर्वतन होते है। इन परिर्वतनों में गृह वातावरण का प्रमुख योगदान होता है। समायोजन की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया होती हैं। इसका विकास बालकों में धीरे–धीरे होता है। फिर भी यदि इसमें कुछ बातों का विशेष ध्यान दिया जाये तो बालकों में समायोजन की भावना का विकास काफी आसान हो जाता है। सर्वप्रथम बालकों के समायोजन में परिवार की भूमिका होती है। इसके पश्चात विद्यालय तथा वहां का वातावरण बालको के कुशल समायोजन के लिए उत्तरदायी होता है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यार्थियों के गृह वातावरण का समायोजन पर प्रभाव के अध्ययन को आधार बनाया गया है। गृह वातावरण का समायोजन पर प्रभाव पर पूर्व में अनेक अध्ययन शोधकार्य किये गये है।

वाजपेयी (1999)ने समायोजन पर जाति के प्रभाव का अध्ययन हाईस्कूल की 400 बालिकाओं पर किया। इन बालिकाओं का चयन उन्होंने मध्यप्रदेश के धार, झबूआ, खरगोन जिले से किया। समायोजन का मापन बैल समायोजन सूची द्वारा किया। ओ0पी0मल्होत्रा (1990) ने "इम्पैक्ट ऑफ एजूकेशन ऑन द निकोबारीज़ ट्राइबल लाइफ एन्ड एडजस्ट्मेन्ट" नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया गया। इन्होनें अपने अध्ययन में निकोबारीज जनजातीय समूह के रहन–सहन व समायोजन पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया। अरोरा(1990)ने विद्यार्थियों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक निष्पति कें मध्य –सम्बन्ध ज्ञात करने हेतू एक शोध कार्य किया। 11 वी कक्षा के 100 विद्यार्थियों को इस शोध के लिए अपना न्यादर्श चुना। मिश्रा द्वारा निर्मित गृह वातावरण मापनी के प्रयोग तथा शैक्षिक निष्पति के आधारस्वरूप हाईस्कूल परीक्षा के अकों का प्रयोग आकडे एकत्र करने के लिए किया गयां ।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के गृह वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देष्य :

1.जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।

2.जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

3.जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना :

1जौनसारी जनजाति के. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2जौनसारी जनजाति के. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3जौनसारी जनजाति के. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या :

1. गृह वातावरण : विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक विकास पर गृह वातावरण का प्रभाव पड़ता हैं। इसी वातावरण में बालक अनेंक प्रकार की साधारण तथा बुद्धि प्रधान शिक्षायें सीखता है। इसे ही गृह वातावरण कहते है।

2. समायोजन : लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सांमजस्य पूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है। यहां समायोजन से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक एवं सवैंगात्मक समायोजन से है।

3. माध्यमिक विद्यालय : ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 9 व 10 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण करवाया जाता है, माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते है।

न्यादर्ष :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तरांखण्ड के देहरादून जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है। इनमें 200 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय से तथा 200 विद्यार्थी गैर–सरकारी विद्यालय से लिए गये है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी.सिंह द्वारा निर्मित स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची को लिया गया है। तथा गृह वातावरण के अध्ययन हेतु डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित गृह वातावरण परिसूची का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. वर्तमान अध्ययन केवल देहरादून जिले तक सीमित किया गया है।
2. अध्ययन हेतु माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयो के विद्यार्थियो को चुना है।
3. न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 400 विद्यार्थियो का चयन किया जाएगा, जिनमें से 200 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय से एवं 200 विद्यार्थी गरै सरकारी विद्यालय से लिए है।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के गृह वातावरण का उनके समायोजन प्रभाव का अध्ययन किया गया है।
5. अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
6. सम्भावित परिकल्पनाओ के आधार पर सांख्यिकी के रूप मे "मध्यमान", "प्रमाप विचलन", "टी परीक्षण" एवं "सहसम्बन्ध" का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी : प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत निर्धारित उद्देश्यों के संदर्भ में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात, सह–सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

परिकल्पना संख्या : 1– जौनसारी जनजाति के. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका –1

क्र,स	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रातिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	सरकारी	200	190.20	1.87	9.72	0.05 स्तर पर सार्थक
2	गैर–सरकारी	200	192.40	1.37		

(df = N+N – 2 = 200+200 – 2 = 398)

उपरोक्त तालिका संख्या 1 जौनसारी जनजाति के. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह वातावरण से सम्बन्धित आंकडों का मध्यमान क्रमशः 190.20 व 192.40 तथा मानक विचलन क्रमशः 1.87 व 1.37 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांको की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 9.72 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 398 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी में दिये गये मान 1.97 से अधिक

है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्याः 2– जौनसारी जनजाति के. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका – 2

क्र,स	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रातिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	सरकारी	200	190.20	1.87	9.72	0.05 स्तर पर सार्थक
2	गैर–सरकारी	200	192.40	1.37		

df = N+N – 2 = 200+200 – 2 = 398

उपरोक्त तालिका संख्या 2 में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित आंकडों का मध्यमान क्रमशः 16.92 एवं 17.67 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.25 एवं 2.20 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांकों के आधार पर गणना द्वारा क्रान्तिक अनुपात मान 3.37 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 398 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी में दिये गये मान 1.97 से अधिक है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्याः 3

जौनसारी जनजाति के. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

तालिका – 3

स्मूह	न्यादर्श	सह–सम्बन्ध गुणांक का मान(r)	सार्थकता स्तर
गृह वातावरण समायोजन	400	+0.25	0.05 स्तर पर सार्थकता

df = N+N – 2 = 200+200 – 2 = 398

सारणी संख्या 3 में माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध को दर्शाया गया है। प्राप्त आंकड़ो की गणना से सह–सम्बन्ध का मान 0.25 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 398 पर सारणी मूल्य 0.098 से अधिक है। अतः दोनों चरों में सार्थक धनात्मक सह–सम्बन्ध है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

- जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह वातावरण में सार्थक अंतर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण उच्च पाया गया है।
- जौनसारी जनजाति माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी अधिक समायोजित पाये गये।
- जौनसारी जनजाति माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन में घनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया। अर्थात् विद्यालय वातावरण उच्च कोटि का होने पर छात्रों की समायोजन क्षमता भी उच्च होती है तथा विद्यालय वातावरण निम्न कोटि का होने पर समायोजन की क्षमता भी निम्न कोटि की होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

- बेस्ट, जॉन डब्लयू (1963): शि ाक्षा में शोध, प्रेन्टीस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0लि0, नई दिल्ली
- मंगल, एस.के. (1996): शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाश ब्रदर्स, लुधियाना।
- कपिल, एच.के. (2004): ''अनुसंधान विधियाँ'', हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
- राय, पारसनाथ (2012): ''अनुसंधान परिचय'' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- सिंह, अरूण कुमार (2013) : 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा ि"ाक्षा में शोध विधियाँ'' मोतीलाल बनारसीदास पब्लिके"ान, नई दिल्ली।
- शाह टीकाराम, जौ नसार भावर ऐतिहासिक सन्दर्भ : समाज संस्कृति और इतिहास, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी,
- देहरादून, उत्तराखण्ड, पेज नं0–395
- जौनसारी रतनसिंह, जौनसार भावर एक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन, गीतांजली प्रकाशन,देहरादून,
- 'चौहान विद्यासिंह, भारत की जनजातियां, ट्रांस मीडिया प्रकाशन, श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड,
- गैरेट, हेनरी ई. (2014): 'fशक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग'' कल्याणी पबि्yशर्स, नई दिल्ली।
- अग्रवाल श्वेता (2015): ''उच्च माध्यमिक विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं का संघटनात्मक वातावरण एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' ि"ाक्षा चिन्तन शोध पत्रिका, नोएडा, अंक जुलाई–सितम्बर 2015, पेज नं. 14–22
- सिंह, नीलू (2016): विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालय वातावरण द्वारा पडने वाले प्रभाव का अध्ययन'' इन्टरने"ानल जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लेनरी एज्यूके"ान एण्ड रिसर्च, वोल्यूम 1, अंक 2, अप्रैल 2016, पेज नं. 31–34